कारीगरों के लिए सर्कुलर इकोनॉमी

कचरे और आक्रामक पौधों को आय के साधन में बदलना

यह मॉड्यूल बताता है कि कारीगर केवल उत्पाद बनाने वाले नहीं हैं। वे सर्कुलर इकोनॉमी के माध्यम से पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं को कमाई के अवसर में बदल सकते हैं।

सीखने के उद्देश्य

- सर्कुलर इकोनॉमी क्या है, इसे समझना।
- यह जानना कि प्राकृतिक रंग (Natural Dyes) सर्कुलर प्रणाली को कैसे बढ़ावा देते हैं।
- आक्रामक पौधों और कृषि कचरे को कच्चे माल के रूप में उपयोग करना।
- ज़ीरो-वेस्ट सिद्धांत अपनाकर पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद बनाना।

सर्कुलर इकॉनमी मॉडल को समझना।

सर्कुलर इकोनॉमी क्या है?

सर्कुलर इकोनॉमी एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें कचरे को कम किया जाता है और संसाधनों का बार-बार उपयोग किया जाता है।

पारंपरिक व्यवस्था इस प्रकार चलती है:
लो → बनाओ → उपयोग करो → फेंक दो

सर्कुलर व्यवस्था इस प्रकार चलती है:
डिज़ाइन → उपयोग → दोबारा उपयोग → मरम्मत → रीसायकल → पुनर्जीवन

इसका उद्देश्य है:

- कचरा कम करना
- प्राकृतिक संसाधनों का कम दोहन
- उत्पाद की उम्र बढ़ाना
- प्रकृति को पुनर्जीवित करना

प्राकृतिक रंगाई में सर्कुलर इकोनॉमी का मतलब है:

- नवीकरणीय (बार-बार उगने वाले) कच्चे माल का उपयोग
- उत्पादन में कम पर्यावरणीय नुकसान

- कचरे को संसाधन में बदलना
- प्रकृति को नुकसान पहुँचाने के बजाय उसे सुधारना

वस्त्र उत्पादन में रैखिक (Linear) बनाम परिपत्र (Circular) मॉडल

लीनियर (परंपरागत) सिस्टम:

- रासायनिक/सिंथेटिक रंग
- बहुत अधिक पानी की खपत
- जहरीला पानी नदियों में छोड़ा जाता है
- फास्ट फैशन और जल्दी फेंक देना

सर्कुलर (प्राकृतिक रंग मॉडल):

- पौधों से बने रंग
- स्थानीय कच्चा माल
- रंग के पानी का पुनः उपयोग
- पौधों के अवशेष से खाद बनाना
- टिकाऊ और जैविक रूप से गलने वाले उत्पाद

प्राकृतिक रंगाई लीनियर सिस्टम से सर्कुलर सिस्टम की ओर जाने का मजबूत तरीका है।

हिमालय जैसे क्षेत्रों में सर्कुलर इकोनॉमी क्यों जरूरी है?

जैसे **गढ़वाल हिमालय** जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में:

- प्राकृतिक संसाधनों का सीमित उपयोग होना चाहिए
- कचरा प्रबंधन व्यवस्था कमजोर है
- जलवायु परिवर्तन का खतरा बढ़ रहा है
- लोगों की आजीविका प्रकृति पर निर्भर है

सर्कुलर इकोनॉमी से आर्थिक विकास होता है, लेकिन पर्यावरण को नुकसान नहीं होता।

प्राकृतिक रंग सर्कुलर प्रणाली को कैसे मजबूत करते हैं?

नवीकरणीय स्रोत

प्राकृतिक रंग मिलते हैं:

- पत्तियों से
- छाल से
- फूलों से
- जड़ों से
- बीजों से
- कृषि कचरे से

सिंथेटिक रंग पेट्रोलियम से बनते हैं, लेकिन प्राकृतिक रंग सही तरीके से लेने पर दोबारा उग सकते हैं।

जैविक रूप से गलने वाले और सुरक्षित

प्राकृतिक रंग:

- मिट्टी और पानी में आसानी से घुल जाते हैं
- माइक्रोप्लास्टिक नहीं छोड़ते
- रासायनिक प्रदूषण कम करते हैं
- पानी की गुणवत्ता बेहतर रखते हैं

इससे नदियों और मिट्टी की रक्षा होती है।

कम कार्बन उत्सर्जन

यदि कच्चा माल स्थानीय हो:

- परिवहन कम होगा
- ऊर्जा की खपत कम होगी
- प्रदूषण कम होगा

इससे कार्बन उत्सर्जन कम होता है।

बंद चक्र (Closed-Loop) प्रणाली

प्राकृतिक रंगाई में:

- रंग का पानी दोबारा उपयोग किया जा सकता है
- बचे हुए पौधों से खाद बनाई जा सकती है
- अवशेषों का उपयोग कागज या अन्य हस्तशिल्प में किया जा सकता है

इससे रंगाई एक पुनर्जीवित करने वाली प्रक्रिया बन जाती है।

पारंपरिक ज्ञान

हिमालयी समुदाय पहले से ही सर्कुलर पद्धति अपनाते आए हैं:

- मौसम के अनुसार संग्रह
- पौधों को दोबारा उगने का समय देना
- एक ही पौधे का कई तरह से उपयोग
- चीजों को फेंकने के बजाय मरम्मत करना

प्राकृतिक रंगाई इन परंपराओं को फिर से मजबूत करती है।

आक्रामक पौधों और कृषि कचरे का उपयोग

आक्रामक पौधे

जैसे:

- लैंटाना
- यूफेटोरियम
- हिमालयन नॉटवीड
- पार्थेनियम (कांग्रेस घास)

ये पौधे जैव विविधता को नुकसान पहुँचाते हैं, लेकिन इनका उपयोग किया जा सकता है:

- प्राकृतिक रंग बनाने में
- फाइबर आधारित शिल्प में
- हाथ से बने कागज में

- फर्नीचर और टोकरियाँ बनाने में

पर्यावरणीय लाभ:

- आक्रामक पौधों का फैलाव कम होगा
- स्थानीय पौधों को बढ़ने का मौका मिलेगा
- जंगलों की बहाली होगी

आर्थिक लाभ:

- मुफ्त कच्चा माल
- रोजगार के अवसर
- लागत में कमी

इस तरह समस्या अवसर बन जाती है।

कृषि कचरे का उपयोग

जैसे:

- अनार के छिलके
- प्याज के छिलके
- अखरोट के छिलके
- चाय का कचरा
- मंदिरों के गेंदे के फूल

ये आमतौर पर फेंक दिए जाते हैं, लेकिन इनसे अच्छे रंग मिल सकते हैं।

इससे:

- कचरा कम होगा
- मीथेन गैस कम बनेगी
- प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव कम होगा

टिकाऊ संग्रह (Sustainable Harvesting)

कच्चा माल लेते समय:

- मौसम का ध्यान रखें
- अलग-अलग जगह से बारी-बारी से लें
- वन विभाग के नियम मानें
- मिट्टी और पानी की सुरक्षा करें

सर्कुलर प्रणाली प्रकृति को नुकसान नहीं पहुँचानी चाहिए।

बाजार के लिए पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद बनाना

सर्कुलर इकोनॉमी का मतलब है ऐसे उत्पाद बनाना जो बिक सकें।

ज़ीरो-वेस्ट डिज़ाइन क्या है?

- कपड़े का पूरा उपयोग
- कटिंग का कम से कम कचरा
- बचे टुकड़ों का उपयोग
- जैविक कचरे से खाद बनाना

उदाहरण:

- पैटर्न को सही तरीके से काटना
- टुकड़ों से पैचवर्क बनाना
- बचे कपड़े से छोटे उत्पाद बनाना
- पुराने उत्पादों को दोबारा रंगना

ज़ीरो-वेस्ट रंगाई के तरीके

- सही मात्रा में रंग का उपयोग
- हल्के रंग के लिए उसी पानी का दोबारा उपयोग
- पौधों के अवशेष से खाद बनाना
- धूप में सुखाना
- पानी को छानकर दोबारा उपयोग करना

पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद

- प्राकृतिक रंग से रंगे दुपट्टे और स्टोल
- ब्लॉक प्रिंट कपड़े
- हर्बल रंग वाले होम टेक्सटाइल
- प्राकृतिक रंग का सूत
- ऑर्गेनिक कॉटन के कपड़े
- पौधों से रंगा कागज

आज के ग्राहक चाहते हैं:

- उत्पाद की पूरी जानकारी
- पर्यावरण प्रमाण पत्र
- हस्तनिर्मित उत्पाद
- उत्पाद की कहानी
- कम पर्यावरणीय प्रभाव

सर्कुलर ब्रांडिंग

कारीगर अपने उत्पाद के साथ लिख सकते हैं:

- “जंगल के आक्रामक पौधों से रंगा गया”
- “ज़ीरो-वेस्ट प्राकृतिक रंग प्रक्रिया”
- “पानी बचाने वाली रंगाई”
- “सर्कुलर इकोनॉमी सिद्धांतों पर आधारित हस्तनिर्मित उत्पाद”

यह बाजार में अलग पहचान बनाता है।

आर्थिक स्थिरता

ज़ीरो-वेस्ट उत्पादन:

- लागत कम करता है

- लाभ बढ़ाता है
- उत्पाद का मूल्य बढ़ाता है
- निर्यात बाजार खोलता है

सर्कुलर प्रणाली भविष्य की समस्याओं से बचाव करती है।

निष्कर्ष

प्राकृतिक रंगाई में सर्कुलर इकोनॉमी केवल टिकाऊपन नहीं है, बल्कि पुनर्जीवन है।

यह:

- पर्यावरण को सुधारती है
- कचरा कम करती है
- स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करती है
- सांस्कृतिक विरासत को बचाती है
- जलवायु परिवर्तन से लड़ने में मदद करती है
- प्रीमियम टिकाऊ उत्पाद बनाती है

हिमालयी कारीगरों के लिए सर्कुलर इकोनॉमी पर्यावरण की जिम्मेदारी भी है और एक समझदारी भरी आर्थिक रणनीति भी।